एम0 एड0 स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य सम्बन्ध का सांख्यिकीय अध्ययन

प्रतिमा श्रीवास्तव
शोध छात्रा, शिक्षा–शास्त्र विभाग
आर्यावर्त इंस्टीट्यूट ऑफ हाईयर एजूकेशन, लखनऊ–226025, उ0प्र0, भारत
pratima943a@gmail.com

प्राप्त तिथि– 06.04.2016; स्वीकृत तिथि– 30.08.2016

सार– प्रस्तुत शोध पत्र में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन में सार्थक व सकारात्मक सम्बन्ध होने की परिकल्पना के आँकड़ों को विश्लेषण द्वारा सत्यापित किया गया है। वी0 के0 मित्तल द्वारा विकसित परिसूची स्कूल तथा कॉलेज के छात्रों के लिए बनायी गयी है। इस विधि को दोनों लिंगों के लिए प्रयोग किया जा सकता है। महिला तथा पुरुष के लिए अलग–अलग सीट का प्रयोग किया जाता है। यह उपकरण सुसमायोजित तथा कुसमायोजित बच्चों को पहचानने के लिए प्रयोग किया जाता है।

बीज शब्द– विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन, वी0 के0 मित्तल उपकरण, सांख्यिकीय अध्ययन।

Statistical study on relationship between educational achievements and adjustment of M.Ed. level students

Pratima Srivastava
Research scholar, Department of Education
Aryavart Institute of Higher Education, Lucknow-226025, U.P., India
pratima943a@gmail.com

Abstract

In this paper, author has verified and finds a positive and meaningful relationship between educational achievements and adjustment of students through data analysis with the help of V.K. Mittal's tool for both male and female students.

Key words- Educational achievements of students, adjustment, V.K. Mittal's Tool, data analysis.

1. प्रस्तावना– शिक्षा सतत् चलने वाली एक प्रक्रिया है जो समाज को निरन्तर प्रभावित करते हुए स्वयं समाज से प्रभावित होती रहती है। आज की सामाजिक परिस्थिति के लिए यदि शिक्षा को जिम्मेदार ठहराया जाये तो शिक्षा की दयनीय स्थिति के लिए समाज को उत्तरदायी मानना पड़ेगा अर्थात् समाज और शिक्षा एक दूसरे के पूरक है।[1] प्रस्तुत शोधपत्र मे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन में सार्थक व सकारात्मक सम्बन्ध होने की परिकल्पना के आँकड़ों के विश्लेषण द्वारा सत्यापन किया गया है। वी0 के0 मित्तल[2] द्वारा विकसित परिसूची स्कूल तथा कॉलेज के छात्रों के लिए बनायी गयी है। यह दोनों लिंगों के लिए प्रयोग किया जा सकता है। महिला तथा पुरूष के लिए अलग–अलग सीट का प्रयोग किया जाता है। यह उपकरण सुसमायोजित तथा कुसमायोजित बच्चों को पहचानने के लिए प्रयोग किया जाता है।

2. सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा, किसी भी अनुसंधान समस्या के समाधान की खोज में महत्वपूर्ण कदम है तथा हमारे अनुसंधान नियोजन में भी सहायता करता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु अनुसंधानकर्ता, विभिन्न प्रकार के जर्नल्स, शोध प्रबंध, पुस्तकें तथा शोध प्रपत्रों इत्यादि से अपनी समस्या के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करता है। सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधानकर्ता को जिस क्षेत्र में वह अनुसंधान करने वाली है उसे वर्तमान ज्ञान से परिचित कराती है तथा निम्न उद्देश्य पूर्ण करती हैं–

1. सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा से, शोधकर्ता को अपने शोध क्षेत्र की सीमा का निर्धारण करने में सहायता मिलती है।
2. सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा से, समस्या के परिसीमन व उसकी परिभाषा तय करने में सहायता मिलती है।
3. सम्बन्धित साहित्य के ज्ञान से, शोधकर्ता को व्यक्तियों द्वारा किये गये कार्य से पूर्ण परिचय हो जाता है और वह अपने उद्देश्यों का स्पष्ट एवं संक्षिप्त रूप से वर्णन कर सकता है।
4. सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा से वह पहले से ही सिद्व कार्यो को अनजाने में दोहराने से बचेगा।
5. सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से, शोधकर्ता अलाभप्रद एवं अनुपयोगी समस्याओं से बच सकता है।

2.1 **अवलोकन–** उपर्युक्त साहित्य के पुनरावलोकन, दृष्टिपात तथा विश्लेषण करें तो यह तथ्य उभर कर आता है कि विभिन्न वर्षो में विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा दिए गए निष्कर्षों में बृहद् सीमा तक समानता है परन्तु देश विदेश में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने जो भी शोध अध्ययन किये हैं उनमें दोनों चर अर्थात् शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन के सह–संबंध का अभाव है अर्थात् दोनों चरों के मध्य सह–संबंध किसी भी मनोवैज्ञानिक ने नहीं निकाला है तथा साथ ही साथ किसी मनोवैज्ञानिक ने एम0एड0 स्तर को भी नहीं लिया है अधिकतर माध्यमिक स्तर पर हुए है या प्राथमिक स्तर पर हुए है। अतः एम0 एड0 स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना नवीन अध्ययन है। भारतीय परिवेश में इस संदर्भ में बहुत कम शोध हुए हैं। विशेषकर कि लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ, एवं सम्बद्व चार संस्थानों के एम0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना एक पूर्णतः नवीन अध्ययन है।

2.2 **न्यादर्श–** न्यादर्श को प्रतिदर्श भी कहते हैं। न्यादर्श जीवसंख्या की विशेषताओं का प्रतिबिम्ब होता है। न्यादर्श समष्टि का वह भाग होता है जिसे अनुसंधानकर्ता द्वारा वास्तविक अध्ययन के लिये चयनित किया जाता है। न्यादर्श समष्टि का प्रतिनिधित्व करने वाला सूक्ष्म रूप होता है तथा इससे प्राप्त सूचनाओं का सामान्यीकरण करके समष्टि के बारे में अनुमान लगाया जाता है। न्यादर्श समष्टि की कुछ ऐसी इकाइयों का संकलन है जिन्हें समष्टि की विशेषताओं को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण स्वरूप चुना जाता है।

2.2.1 **न्यादर्शन प्रक्रिया–** प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन की सम्भविता प्रतिदर्श के एक प्रमुख प्रकार साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्शन प्रविधि का प्रयोग किया गया है। चयनित इकाईयों को एम0 एड0 स्तर के 100 विद्यार्थियों के आधार पर विवरण तालिका–2.2.1 में दर्शाया गया है।

न्यादर्श तालिका–2.2.1

क्र0सं0	संस्थान का नाम	छात्र	छात्रा	कुल संख्या
1	आर्यावर्त इन्स्टीट्यूट ऑफ हाईयर एजूकेशन, लखनऊ	03	28	31
2	लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ	08	24	32
3	जी0 एस0 आर0 एम0 डिग्री कॉलेज, लखनऊ	00	10	10
4	रामा डिग्री कॉलेज, लखनऊ	02	25	27
			कुल योग– 100	

3 **उपकरण–** प्रस्तुत शोध में एम0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के संदर्भ में प्रदत्तों का संकलन करना है। प्रत्येक संकलन तथा विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भिन्न प्रकार के उपकरण प्रयुक्त होते हैं। अतः संदर्भित शोध अध्ययन की पूर्ति में प्रदत्तों के संकलन मे निम्न उपकरणों का प्रयोग सुनिश्चित किया गया।

3.1 **एम0 एड0 स्तर के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता मापने के लिए वी0 के0 मित्तल की समायोजन परिसूची–** वी0 के0 मित्तल द्वारा विकसित यह परिसूची स्कूल तथा कॉलेज के छात्रों के लिए बनायी गयी है। यह दोनों लिंगों के लिए प्रयोग किया जा सकता है। महिला तथा पुरूष के लिए अलग–अलग सीट का प्रयोग किया जाता है। यह उपकरण सुसमायोजित तथा कुसमायोजित बच्चों को पहचानने के लिए प्रयोग किया जाता है। यह समायोजन परिसूची वी0 के0 मित्तल द्वारा बनायी गयी तथा प्रमाणीकृत किया गया।

3.2 **परिकल्पना–** परिकल्पना परीक्षण के लिए 0.05 स्तर को आधार माना गया।

4. **आँकड़ों का विश्लेषण**

4.1 प्र**योग व आँकड़ों का सारांश–** एक विद्यार्थी जो कि समाज के साथ अच्छा तालमेल रखता है उसके अध्ययन के क्षेत्र में सफल होने की अच्छी सम्भावना होनी चाहिये। उक्त कथन के सत्य होने की जांच शोध–पत्र में की गयी हैं। विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को उनके बी0एड0 के प्रतिशत अंकों से मापा गया है व उसके घर, सामाजिक, स्वास्थ्य व अध्ययनरत

संस्थान में समायोजन को वी0के0 मित्तल द्वारा उपलब्ध प्रश्नावली में प्राप्त प्रतिशत अंको से मापा गया है। प्रयोग मे लाये गये चरों को तालिका–4.1.1 में दर्शाया गया है।

तालिका– 4.1.1
उपयोग में लाये गये चरों का विवरण

विवरण	चर का नाम	चर का प्रकार	आँकड़ों की संख्या
बी0एड0 (% अंक)	उपलब्धि (XBED)	स्वतन्त्र चर	100
ग्रह–समायोजन (% अंक)	होम(YA)	आश्रित चर	100
सामाजिक–समायोजन (% अंक)	सोशल(YB)	आश्रित चर	100
स्वास्थ्य–समायोजन (% अंक)	हेल्थ(YC)	आश्रित चर	100
विद्यालय–समायोजन (% अंक)	स्कूल(YD)	आश्रित चर	100
समायोजन आश्रित चरों का योग	स्मायोजन(YT)	व्युत्पन्न चर	100

विश्लेषण के लिये लखनऊ विश्वविद्यालय एवं सम्बद्व महाविद्यालयों, लखनऊ जनपद की एम0एड0 की 100 महिला विद्यार्थियों का एक न्यादर्श साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्शन प्रविधि से लिया गया है। समष्टि में पुरूष विद्यार्थियों की संख्या अतिअल्प होने के कारण ही शोध के लिये सिर्फ महिला विद्यार्थियों को लिया गया है। समष्टि व न्यादर्श से सम्बन्धित सारी जानकारी को तालिका–4.1.2 में सूचीबद्व किया गया है:–

तालिका–4.1.2
आँकड़ों की सामान्य जानकारी

मद	विवरण
समष्टि	लखनऊ विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी
विद्यार्थियों के अध्ययन का स्तर	एम0एड0
समष्टि में शामिल विद्यार्थियों का लिंग	महिला
न्यादर्श में शामिल विद्यार्थियों की संख्या	100
न्यादर्श विधि	साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्शन प्रविधि

4.2 **विश्लेषण–** न्यादर्श में शामिल विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि व सामाजिक समायोजन से सम्बन्धित चरों का सर्वप्रथम संक्षिप्त अवलोकन व सामान्य वितरण परीक्षण किया गया है। चूँकि सह–सम्बन्ध विश्लेषण सिर्फ सामान्य वितरण का अनुसरण करने वाले चरों पर ही लागू होता है इसलिये चरों का सामान्य वितरण परीक्षण अत्यन्त आवश्यक है। प्रयोग में शामिल विद्यार्थियों को विभिन्न चरों द्वारा चार वर्गो अ, ब, स, द में बांटा गया है। विद्यार्थियों के वर्गीकरण के लिये चरों को वी0के0 मित्तल द्वारा उपलब्ध करायी गयी प्रमाणिक सारणियों का प्रयोग किया गया है। चरों द्वारा वर्गीकरण के लिये मानकीकृत व्युत्पन्न चर व प्राप्तांक दोनों का उपयोग किया गया है। वर्ग अ, ब, स,द के निर्धारण के लिये वी0के0 मित्तल के शोध पत्र से ली गयी सारणियां व अन्य विवरण तालिका–4.2.1 में दिया गया है।

तालिका–4.2.1
विद्यार्थियों कें वर्गीकरण के मानक

विवरण	विद्यार्थी वर्ग	वर्ग मानक
मानवीकृत चरों के लिये	अ	2 से अधिक
	ब	1 से 2 तक
	स	–1 से 1 तक
	द	– 1 से कम

प्राप्तांकों के लिये	अ	219 (91.25%) से अधिक
	ब	207 (86.25%) से 219 तक
	स	183 (76.25%) से 207 तक
	द	183 (76.25%) से कम

इसके बाद विद्यार्थियों के उपरोक्त वर्गीकरण की समीक्षा की गयी है। तदोपरान्त शैक्षणिक उपलब्धि व समायोजन में सह–सम्बन्ध गुणांक का प्रथमतः परिकलन व लेखा–चित्र से उसके परिकल्पना के अनुरूप होने की विवेचना की गयी है। अन्ततः उक्त सह–सम्बन्ध गुणांक के सांख्यिक अर्थपूर्णहोने का परीक्षण किया गया है। समस्त विश्लेषण निम्नलिखित चरणों में किया गया है:–

1. चरों की केन्द्रीय प्रवृत्ति व विचलन
2. चरों का सामान्य वितरण परीक्षण
3. समायोजन व शैक्षणिक उपलब्धि का वर्गीकरण
4. शैक्षणिक उपलब्धि व समायोजन चरों में सह–सम्बन्ध
5. सह–सम्बन्ध परीक्षण

4.2.1 चरों की केन्द्रीय प्रवृत्ति व विचलन– उपलब्धि व समायोजन चरों XBED, YA, YB, YC, YD, YT के माध्य व माध्यिका के मान लगभग बराबर है। अतः चरों के वितरण के सममित होने की सरसरी तौर पर पुष्टि होती है। चरों के संक्षिप्त सांख्यमान, तालिका–4.2.1.1 में दिये गये हैं।

तालिका–4.2.1.1
चरों के संक्षिप्त सांख्यमान

वर्णात्मक आँकड़े	उपलब्धि XBED	होम YA	सोशल YB	हेल्थ YC	स्कूल YD	समायोजन YT
न्यूनतम	50.00	49.00	51.00	38.00	31.00	218.00
प्रथम चतुर्थक	62.00	66.75	69.75	66.00	62.75	269.80
माध्यिका	67.00	73.50	78.00	73.00	70.00	293.00
माध्य	66.18	74.18	77.28	72.87	69.15	293.50
तृतीय चतुर्थक	71.00	83.00	85.25	81.00	77.00	318.20
उच्चतम	78.40	98.00	96.00	97.00	95.00	369.00

चरों के बाक्स चित्र से भी उनके सामान्य वितरण को अनुसरित करने की पुष्टि होती है। साथ ही अतिन्यून मान सिर्फ YC व YD में एक–एक है जो सिर्फ एक ही विद्यार्थी का है। उक्त विद्यार्थी कुल समायोजन चर में प्रदर्शित नहीं है इसलिये इसको विश्लेषण में रखा गया है। चरों के बाक्सचित्र लेखाचित्र–4.01 में दिये गये हैं।

लेखाचित्र–4.01
चरों के बाक्स चित्र

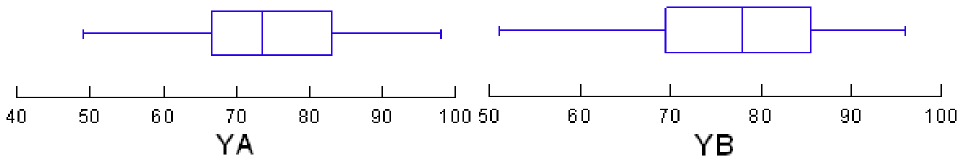

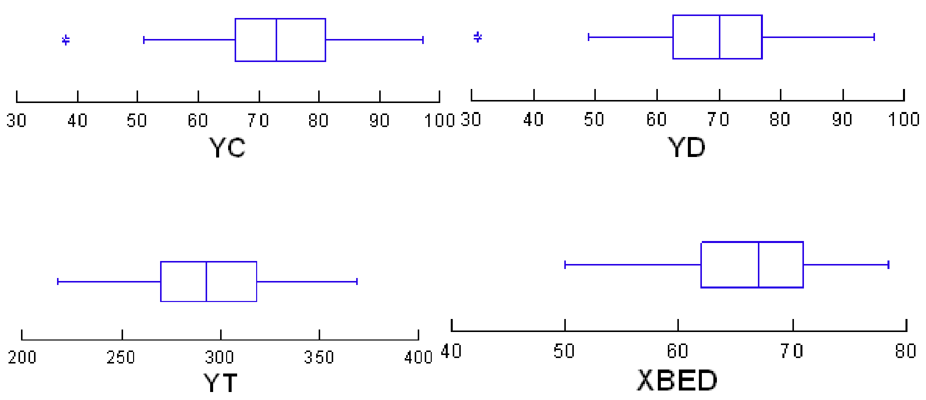

चरों कें आयतचित्र केन्द्र में अधिक विद्यार्थी व पुच्छ में कम विद्यार्थी दर्शाते हैं। जिससे भी चरों के सामान्य वितरण को अनुसरित करने की एक बार और पुष्टि होती है। आयतचित्र लेखाचित्र–4.02 में दिये गये है।

लेखाचित्र–4.02
चरों के आयतचित्र

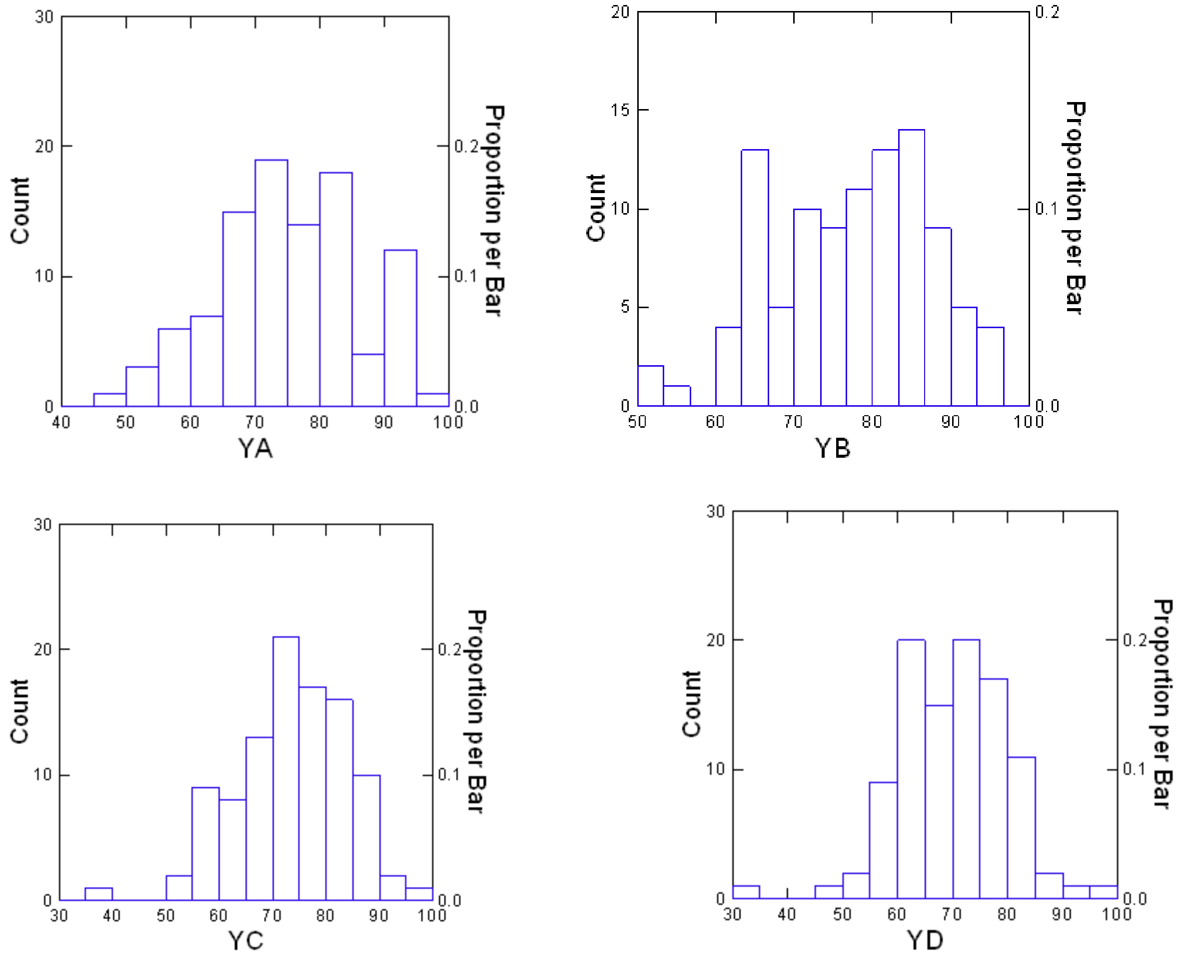

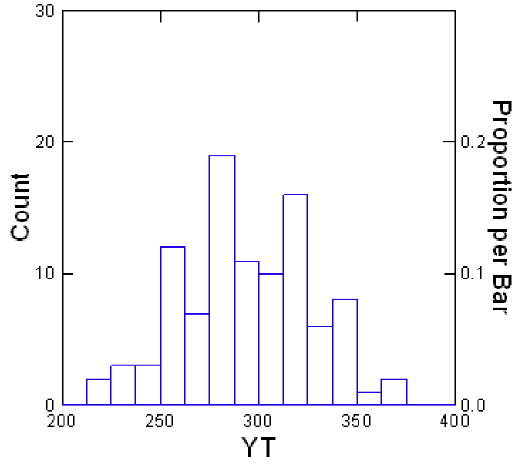

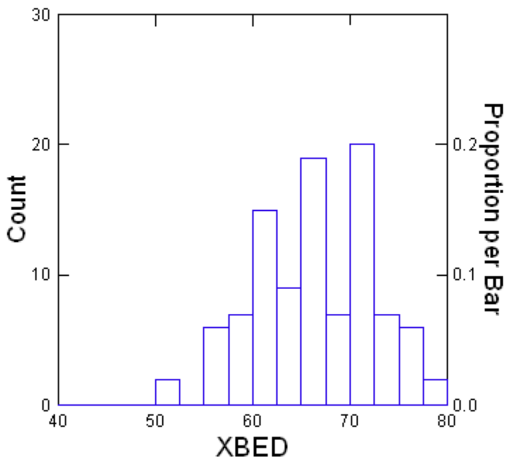

4.2.2 **चरों का सामान्य वितरण परीक्षण–** उपलब्धि व समायोजन चरों के प्रारम्भिक निरीक्षण से उनके वितरण को अनुसरित करने की अधिक सम्भावनाएं है। उक्त का पूर्ण रूप से निर्धारण शैपिरो–विल्क[1] परीक्षण से किया गया है। शैपिरो–विल्क परीक्षण का पी0मान सभी चरों के लिये 0.05 से अधिक है। अतः चरों के सामान्य वितरण से संकलित न होने के पक्ष में पर्याप्त सांख्यिकीय साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। शैपिरो–विल्क(सामान्य वितरण) परीक्षण मान व उसका पी0 मान तालिका–4.2.2.2 में दिये गये हैं।

तालिका–4.2.2.2
चरों का सामान्य वितरण परीक्षण

चर	शैपिरो–विल्क परीक्षण मान	शैपिरो–विल्क परीक्षण पी0 मान
उपलब्धि (XBED)	0.99	0.31
होम (YA)	0.98	0.24
सोशल (YB)	0.98	0.06
हेल्थ (YC)	0.98	0.25
स्कूल (YD)	0.98	0.08
समायोजन (YT)	0.99	0.69

4.2.3 **समायोजन व शैक्षणिक उपलब्धि का वर्गीकरण–** विद्यार्थियों को सभी चरों के आधार पर चार वर्गो अ, ब, स, द में बांटा गया है। मानकीकृत चरों से मिले विद्यार्थी वर्ग लगभग एक जैसे हैं जबकि प्राप्तांकों के आधार पर मिले वर्गों में समरूपता नहीं दिखती है। प्राप्तांकों से एक जैसे वर्ग न मिलने का कारण प्रतिदर्श में विद्यार्थियों की कम संख्या (100) होना है जबकि प्रयोग में लाये गये मानक लगभग (1200) विद्यार्थियों के प्रतिदर्श से वी0के0 मित्तल द्वारा तैयार किये गये हैं। दूसरी तरफ मानकीकृत चरों में वर्गीकरण के मानक व्यापक रूप से स्वीकार है। विद्यार्थियों का वर्गीकरण तालिका–4.2.3.1 में दिया गया है।

तालिका–4.2.3.1
विद्यार्थियों का वर्गीकरण

विवरण	चर	अ	ब	स	द	कुल
मानकीकृत चरों के आधार पर विद्यार्थियों का वर्गीकरण	उपलब्धि (XBED)	1	14	67	18	100
	होम (YA)	1	14	70	15	100
	सोशल (YB)	0	16	64	20	100
	हेल्थ(YC)	1	17	65	17	100
	स्कूल (YD)	2	13	72	13	100
	समायोजन (YT)	2	15	65	18	100
प्राप्तांकों के आधार पर विद्यार्थियों का	उपलब्धि (XBED)	20	22	43	15	100
	होम (YA)	13	4	32	51	100

वर्गीकरण	सोशल (YB)	16	18	31	35	100
	हेल्थ(YC)	4	14	29	53	100
	स्कूल (YD)	4	3	28	65	100
	समायोजन (YT)	2	10	37	51	100

4.2.4 **शैक्षणिक उपलब्धि व समायोजन चरों में सह–सम्बन्ध–** विद्यार्थियों का वर्गीकरण उनकी शैक्षणिक उपलब्धि व समायोजन में सकारात्मक सम्बन्ध होने की प्रारम्भिक पुष्टि होती है। इस सम्बन्ध का गहन अध्ययन चरों के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक के परिकलन से किया गया है। उपलब्धि (XBED) व समायोजन (YT) के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक (तालिका–4.2.4.1) धनात्मक है। उक्त दोनों चरो के मध्य बिन्दु चित्र (लेखाचित्र–4.03) से भी चरों के मध्य एक धनात्मक सम्बन्ध होने की पुष्टि होती है।

तालिका–4.2.4.1
उपलब्धि व समायोजन में सह–सम्बन्ध गुणांक

	उपलब्धि (XBED)	समायोजन(YT)
उपलब्धि (XBED)	1.00	
समायोजन (YT)	0.31	1.00

लेखाचित्र–4.03
उपलब्धि व समायोजन का बिन्दु चित्र

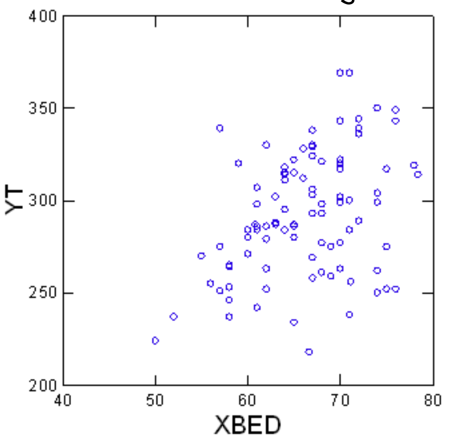

उपलब्धि (XBED) व सभी समायोजन चरों (YA,YB,YC,YD) के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक भी धनात्मक (तालिका–4.24.2) है। साथ ही उक्त चर–युग्मों के बिन्दु चित्र (लेखा चित्र– 4.04) भी धनात्मक सम्बन्ध होने के एक बार और पुष्टि करते है।

तालिका–4.2.4.2
उपलब्धि व समायोजन में सह–सम्बन्ध गुणांक

	उपलब्धि (XBED)	होम YA	सोशल YB	हेल्थ YC	स्कूल YD
उपलब्धि (XBED)	1.00				
होम (YA)	0.27	1.00			
सोशल (YB)	0.19	0.48	1.00		
हेल्थ(YC)	0.26	0.42	0.60	1.00	
स्कूल (YD)	0.29	0.46	0.49	0.70	1.00

लेखाचित्र–4.04
उपलब्धि व समायोजन चरों का बिन्दु चित्र

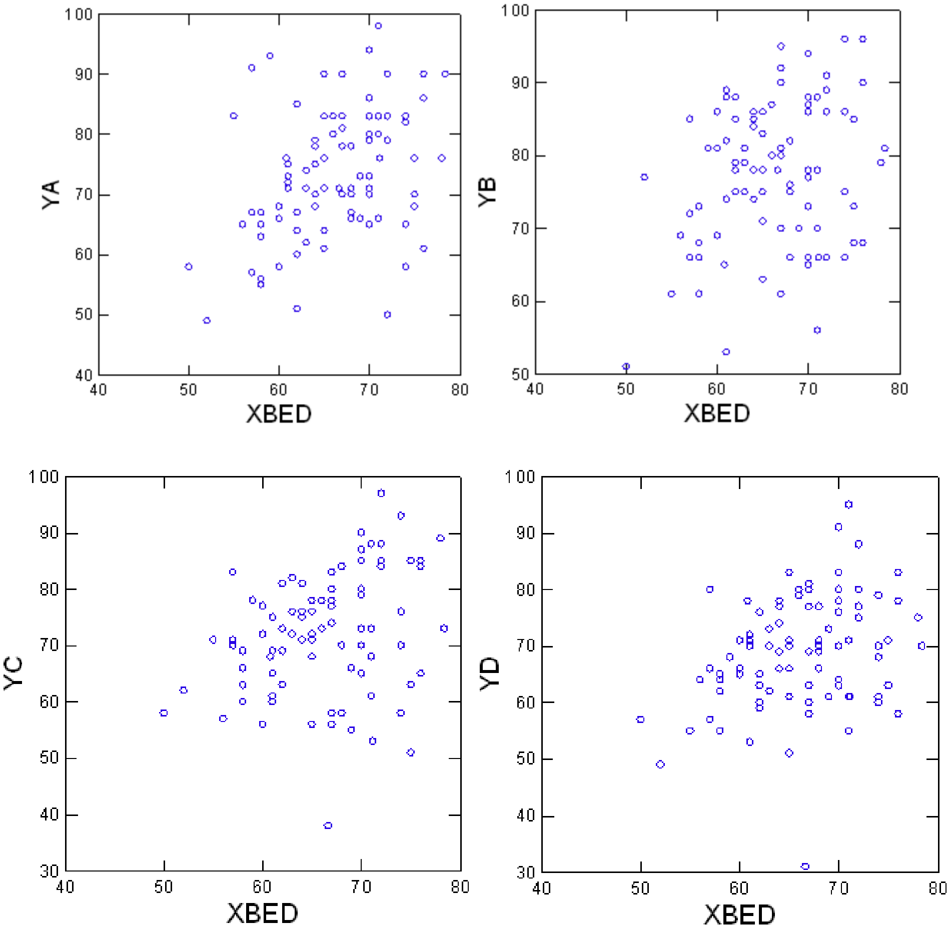

4.2.5 **सह–सम्बन्ध परीक्षण–** उपलब्धि व समायोजन चरों के मध्य विभिन्न सह–सम्बन्ध गुणांकों के धनात्मक होने का सांख्यिकीय परीक्षण टी0–मान से किया गया है। सभी पी0–मान 0.05 से कम (तालिका–4.2.5.1) है। अतः उपलब्धि व समायोजन चरों मध्य सकारात्मक सम्बन्ध होने की सांख्यिकी पुष्टि 95% विश्वास से होती है।

तालिका–4.2.5.1
सह–सम्बन्ध गुणांक परीक्षण

चर युग्म	सह–सम्बन्ध गुणांक	टी0–मान	पी0–मान
उपलब्धि (XBED), होम YA	0.27	2.72	0.01
उपलब्धि (XBED), सोशल YB	0.19	1.96	0.05
उपलब्धि (XBED), हेल्थYC	0.26	2.65	0.01
उपलब्धि (XBED), स्कूलYD	0.28	2.88	0.01
उपलब्धि (XBED), समायोजनYT	0.31	3.26	0.00

5. **सीमाएं–** प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में समय की सीमितता के कारण शोधार्थी को अपना अध्ययन निश्चित सीमाओं में सीमाबद्व करना पड़ा है। इसके फलस्वरूप प्रस्तुत अध्ययन में कुछ कमियां रह गयी है। जिन्हें ध्यान में रखते हुए भावी अनुसांधनकर्ता प्रस्तुत समस्या पर अनेक प्रकार से अध्ययन कर सकते हैं। प्रस्तुत शोध सन्दर्भ में निम्नांकित सीमाएं इस प्रकार हैं–

1. प्रस्तुत शोध में केवल एम0एड0 विद्यार्थियों को लिया गया है। जबकि यह अध्ययन विभिन्न स्तरों पर किया जा सकता है।

2. प्रस्तुत शोध में लखनऊ विभिन्न शहर के चार संस्थानों के विद्यार्थियों को लिया गया है जबकि यह अध्ययन अन्य भिन्न–भिन्न संस्थानों के विद्यार्थियों में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य क्षेत्र केवल लखनऊ जनपद तक ही सीमित है जबकि इसका स्तर और भी व्यापक किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत शोध कार्य हेतु संस्थानों में एम0एड0 स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों को भी प्रतिदर्श के रूप में लिया जा सकता है।
5. प्रस्तुत शोध हेतु केवल 100 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया है, जबकि अग्रिम शोधकर्ता विस्तृत न्यायदर्श का चयन करके अपना शोध अध्ययन सम्पादित कर सकता है, जिससे और भी प्रमाणिक निष्कर्ष प्राप्त हो सकें।
6. प्रस्तुत शोध अध्ययन में दो चरों शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन को लिया गया हैं, जबकि अग्रिम शोध के लिए उपर्युक्त चरों के साथ किन्हीं अन्य चरों यथा सृजनात्मकता, प्रतिबद्धता इत्यादि को भी लिया जा सकता है।

6. **निष्कर्ष–** प्रस्तुत शोध का निरीक्षण करने पर यह ज्ञात होता है कि एम0 एड0 स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन मे सार्थक व सकारात्मक सम्बन्ध होने की प्रारम्भिक पुष्टि होती है। इस सम्बन्ध का गहन अध्ययन चरों के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक के परिकलन से किया गया है। उपलब्धि(XBED) व समायोजन(YT) के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक(तालिका– 4.2.4.1) धनात्मक है। अतः दोनों चरों के मध्य धनात्मक सम्बन्ध होने की पुष्टि होती है। प्रस्तुत शोधपत्र मे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन मे सार्थक व सकारात्मक सम्बन्ध होने की परिकल्पना के आँकड़ो के विश्लेषण द्वारा सत्यापन किया गया है। प्रतिदर्श मे लिये गये विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन के चार विभिन्न क्षेत्रों– गृह समायोजन, सामाजिक समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन तथा स्कूल समायोजन मे धनात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया है। जिसको विद्यार्थियों के उक्त को निरुपित करने वाले चरों के सामान्य वितरण परीक्षण, सह–सम्बन्ध गुणांक परिकलन व सांख्यिकीय सत्यापन से प्रमाणित किया गया है। विश्लेषण के लिये गये प्रतिदर्श का आकार 100 है, जो कि समस्त परिकलन से प्राप्त हुयी जानकारी के सत्य होने के लिये पर्याप्त है। अर्थात जो विद्यार्थी शिक्षा के क्षेत्र में कुशल हैं वह वैसी ही कुशलता से अपने आपको आसपास के सामाजिक वातावरण में समन्वित कर पाते हैं।

सन्दर्भ

1. शपिरो, एस0 एस0 एवं वल्कि, एम0 बी0(1965) एन एनालसिसि ऑफ वेरियस टेस्ट फॉर नॉरमैलिटी, कम्पलीट सम्पलिस बायोमीट्रिक, खण्ड–52, अंक–3–4, मु0पृ0 591–611।
2. मित्तल, वी0 के0(1983) एडजस्टमेंट इवेंटरी, एन.टी.एल.–1010, नेशनल लाइब्रेरी ऑफ एजुकेशनल एण्ड साइकोलॉजिकल टेस्ट, पृ0 6, एन.सी.आर.टी., नई दिल्ली।